'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 अंक 16 4 नवम्बर, 2018 कुल पृष्ठः 8 एक प्रतिः रुपए 7.00 वार्षिक : रुपए 150/-

'संघर्षपूर्ण जीवन के शिक्षक आयुवान सिंह जी'

बालेसर (मा.प्र.शि.)

संघशक्ति, जयपुर

आयुवान निकेतन, कुचामन

विकट एवं विपन्न परिस्थितियों से प्रसन्नता पूर्वक संघर्ष की शिक्षा देने वाले शिक्षक थे आयुवानसिंह जी। वे हर कष्ट पूर्ण परिस्थिति में विनोद करते थे जैसे कष्ट उनको छू ही नहीं रहे। उनके अन्दर बैठा लेखक एवं कवि विपरीत परिस्थिति में मुखर होता था। उनका जीवन विकट परिस्थिति में प्रारम्भ हुआ एवं जीवन का अंत भी कैंसर जैसी लाईलाज बीमारी से लड़ते हुए विकट परिस्थिति में हुआ। वे जीवन भर त्याग एवं ध्येय निष्ठा का साक्षात प्रतीक बन कर रहे। 17 अक्टूबर को संघ के द्वितीय संघ प्रमुख आयुवान सिंह जी की 98वीं जयंती के अवसर पर जोधपुर जिले के बालेसर सत्ता (अमृतनगर) में चल रहे मा.प्र.शि. में शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने उनका जीवन परिचय देते हुए बताया कि 1942 में पूज्य तनसिंह जी के एक पत्रिका में छपे लेख से दोनों का परिचय हुआ। उस लेख को पढ़कर आयुवानसिंह जी ने पूज्य तनसिंह जी को अंग्रेजी में एक पोस्टकार्ड लिखा जिसमें उन्होंने उन्हें नवोदित हीरो कहकर संबोधित किया। दोनों का संपर्क आगे बढ़ा, 1944 में पूज्य तनसिंहजी द्वारा पिलानी में अध्ययनरत रहते बनाए गए श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रथम अधिवेशन का आयुवानसिंह जी को अध्यक्ष बनाया गया। दूसरा अधिवेशन कालीपहाड़ी (झुंझुनूं) में हुआ जिसका अध्यक्ष सौभाग्यसिंह भगतपुरा को बनाया गया। पूज्य तनसिंह जी के साथ उनका सम्पर्क गहन होता गया। 22 दिसम्बर 1946 को बने वर्तमान श्री क्षत्रिय युवक संघ से वे परीचित हुए, बाड़मेर में संघ के चौथे शिविर में वे पहली बार शिविर में आए। 1952 में महाराजा हनवंतसिंहजी के सलाहकार के रूप में उन्होंने पूज्य तनसिंह जी को बाड़मेर से आग्रह पूर्वक चुनाव लड़वाया। स्वयं ने भी दो बार चुनाव लड़ा लेकिन जीत नहीं पाए। 1954 तक उनकी विद्वता एवं संगठन क्षमता से प्रभावित हो पूज्य तनसिंह जी ने उन्हें श्री क्षत्रिय युवक संघ का प्रमुख बनाया। जागीरी उन्मूलन के विरुद्ध हुए भू-स्वामी आंदोलन हेतु बने भूस्वामी संघ के वे अध्यक्ष बने एवं तनसिंह जी ने सचिव का दयित्व निभाया। 1959 के बाद वे पूर्ण रूपेण राजनीति में सक्रिय हुए लेकिन दोनों का मिलना जुलना बना रहा। अंत समय में दिल्ली (एम्स) में तनसिंह जी उनसे मिलने पहुंचे तब उन्होंने उनका हाथ पकड़ लिया और तब दोनों की आंखों में आंसू थे। अंत में 1967 की जनवरी में उन तेजस्वी योद्धा का शरीर कैंसर से हार गया और वे हम सब से विदा हो गए। उन्होंने मेरी साधना, ममता और कर्तव्य, हमारी ऐतिहासिक भूलें आदि अनेक पुस्तकें लिखी जो आज भी संघ के शिक्षण में मार्गदर्शक हैं। हमारी ऐतिहासिक भूलें पुस्तक उनका सुंधा माता शिविर में दिया बौद्धिक है जिसे पूज्य तनसिंह जी ने लिपिबद्ध किया था। उनका तेज इतना था कि आंख से आंख मिलाकर बात करने की हिम्मत नहीं होती थी। उनका श्री क्षत्रिय युवक संघ में अतुलनीय योगदान है लेकिन वे सदैव यही कहते थे कि मैं जो कुछ बना हूं संघ के कारण बना हूं। मेरे पास जो कुछ है संघ का ही है।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

शस्त्र एवं शास्त्र पूजन कर मनाई विजया दशमी

'उठने का संकल्प आवश्यक'

इतिहास के नाम पर हम जिस मध्यकाल की बात करते हैं वह शौर्य का अतुलनीय काल है। मध्यकाल में हमारे शौर्य की तुलना में महाभारत एवं रामायण काल का शौर्य भी नहीं ठहरता लेकिन प्रश्न यह है कि हम लड़ किसलिए रहे थे। जमीन के टुकड़ों एवं सामान्य व्यक्तिगत कारणों के लिए लड़े और यही गिरावट थी। यह गिरावट एक दिन की नहीं बल्कि लंबी यात्रा का परिणाम थी इसलिए पुनः उठने के लिए उससे भी लंबी यात्रा की आवश्यकता है। लेकिन हमारा उठने का संकल्प आवश्यक है। हमारा वह संकल्प ही कार्य रूप में परिणत होगा। हमारे लिए यह महत्त्वपूर्ण है कि हम उस संकल्प के लिए क्या कर रहे हैं, उठने में हमारा क्या सहयोग है। सब मिलकर कुछ करेंगे, यह सोच ही सार्थक नहीं है। निर्णय व्यक्तिगत ही होता है। पूज्य तनसिंह जी ने कहा कि निज को न बनाया तो जग रंच नहीं बनता। समूह इस बनने में सहयोग कर सकता है लेकिन बनना स्वयं को ही पड़ता है। संघ की कार्य प्रणाली ऐसे ही निर्माण की पाठशाला है। यदि हम संस्कारवान बनना चाहते हैं तो बूरे से बूरे व्यक्ति में अच्छाई ढूंढ़नी पड़ेगी और अच्छे से अच्छे व्यक्ति में भी बुराई हो सकती है उसके लिए सावधान रहना पड़ेगा।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

हम सामान्य लोग प्रतिदिन कुछ नियम तय करते हैं और थोड़ी सी विपरीत परिस्थिति आने पर फिसल जाते हैं, अपने आप को माफ कर लेते हैं। लेकिन महापुरुष अपने द्वारा स्वयं के लिए तय किए गए नियमों का कड़ाई से पालन करते हैं। वे नियमों के पीछे की भावना को समझकर व्यवहार करते हैं और जब तक वह मूल भावना आहत न हो उस नियम को छोड़ते नहीं हैं चाहे कैसी भी विपरीत परिस्थिति बने। निश्चित रूप से नियम साधन होते हैं, साध्य नहीं लेकिन साधन के रूप में उनका महत्व कमतर नहीं होता इसलिए जब तक वे साध्य के प्रतिकूल नहीं बन जाएं उनका कठोरता पूर्वक पालन किया जाना चाहिए।

पूज्य तनसिंह जी ने भी समय-समय पर इस प्रकार के नियम धारण किए एवं उनका कठोरता पूर्वक पालन किया। ऐसा ही एक नियम उन्होंने एक बार धारण किया कि वे भगवती की पूजा कर ही भोजन ग्रहण करते थे। अपने साथ देवी की एक छोटी तस्वीर रखते थे, उसकी पूजा अर्चना एवं दर्शनोपरांत ही भोजन ग्रहण करते थे। एक बार वे बाड़मेर से जैसलमेर दौरे के लिए निकले। दिनभर व्यस्तता के बाद शाम को भोजन से पहले पूजा करने बैठे तो पता चला कि वे वह तस्वीर बाड़मेर ही भूल आए हैं। उस समय इतने अधिक साधन नहीं थे। उनका नियम था कि उस तस्वीर का दर्शन कर ही भोजन पाते थे। उस रात भोजन नहीं किया। दूसरे दिन जैसलमेर से बाड़मेर जाने वाली बस में समाचार भिजवाया कि तस्वीर भेजें। इस दौरान पूज्य श्री ने जैसलमेर के गांवों में अपना दौरा जारी रखा। तीसरे दिन शाम तक बस से वह तस्वीर जैसलमेर पहुंची एवं वे क्षेत्र में जहां दौरा कर रहे थे उन तक उस तस्वीर के पहुंचने में चौथा दिन हो गया। पूज्य श्री उस समय तक निराहार रहे एवं चौथे दिन उस तस्वीर की पूजा अर्चना एवं दर्शन कर भोजन ग्रहण किया। हम यह मान सकते हैं कि वे भगवती के भक्त थे इसलिए ऐसा किया लेकिन उनके जैसे भक्त के लिए भगवती की भक्ति के लिए किसी प्रतीक के सहारे की आवश्यकता नहीं थी। लेकिन जो नियम उन्होंने स्वयं के लिए बनाया उसका पालन उनके लिए महत्वपूर्ण था। उस नियम की पालना में स्वयं की सुविधा के लिए कोई फेरबदल करना उन्हें मंजूर नहीं था और स्वयं के प्रति ऐसी कठोरता ने उन्हें जनमानस का प्रेरणा स्रोत बनाया। अपने आपको माफ नहीं करने की उनकी वृत्ति ही साथियों को नियम पालन की दृढ़ता सीखा सकती थी और उनके जैसा शिक्षक इसमें किसी प्रकार की कोताही कैसे बरत सकता था।

जीवनोपयोगी जानकारी

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

(ii) बायोइन्फोर्मेटिक्स (Bio informatics) : बायोइन्फोर्मेटिक्स का अर्थ है - मॉलिक्युलर बायोलॉजी (आणविक जीव विज्ञान) के क्षेत्र में सूचना तकनीकी व कम्प्यूटर विज्ञान का अनुप्रयोग। इस शाखा का विकास मुख्यतः 1980 के पश्चात हुआ है। इसे कम्प्युटेशनल बायोलॉजी के नाम से भी जाना जाता है। सरल शब्दों में इसके अन्तर्गत जीव-विज्ञान की आणविक शाखा की सूचनाओं व आंकड़ों का प्रबंधन व विश्लेषण करने की तकनीक को सम्मिलित किया जाता है। बायोइन्फोर्मेटिक्स की मुख्य गतिविधियों में डी.एन.ए. तथा प्रोटीन सीक्वेंस के विश्लेषण व अनुमापन, प्रोटीन सरंचनाओं के 3-डी मॉडल निर्माण, जीव की खोज, जीनोम सरंचना, ओपोटीन सरंचना का पूर्वानुमान, उद्विकास मॉडल का निर्माण आदि सम्मिलित है। इसका मुख्य कार्य जटिल डेटा को उपयोगी सूचना व ज्ञान में परिवर्तित करना है। अत्याधुनिक बायोलॉजिकल व मेडिकल प्रयोगशालाओं में बड़ी मात्रा में बायोलॉजिकल डेटा निर्मित होता है, जिसके प्रबंधन व विश्लेषण हेतु बायोइन्फोर्मेटिक्स के विशेषज्ञों की आवश्यकता होती है। साथ ही आधुनिक विज्ञान में आनुवंशिकता के बढ़ते महत्त्व ने बायोइन्फोर्मेटिक्स की मांग को बढ़ाया है।

भारत में बायोइन्फॉर्मेटिक्स के अन्तर्गत निम्नलिखित कोर्सेज उपलब्ध हैं :

(A) बी.एस.सी. इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(B) बी.टेक. इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(C) बी.एस.सी. ऑनर्स इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(D) बी.ई. इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(E) सर्टिफिकेट कोर्स इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(F) एडवान्स्ड डिप्लोमा इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(G) पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(H) एम.एस.सी. इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(I) एम. टेक. इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(J) एम.एस.सी. इन बायोइन्फोर्मेटिक्स (ऑनर्स)।
(K) एम.एस. इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(L) एम.ई. इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।
(M) पी.एच.डी. इन बायोइन्फोर्मेटिक्स।

भारत में बायोइन्फोर्मेटिक्स कोर्सेज उपलब्ध करवाने वाले मुख्य संस्थान निम्नलिखित हैं :

(a) आई.आई.टी., दिल्ली।
(b) आई.आई.टी. खडगपुर।
(c) एन.आई.टी., भोपाल।
(d) एन.आई.टी., राऊरकेला।
(e) जे.एन.यू., दिल्ली।
(f) भारती विद्यापीठ युनिवर्सिटी, पूना।

(क्रमशः)

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

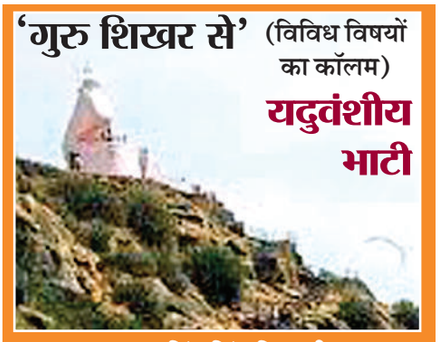

यदुवंशीय भाटी

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

ययाति के पुत्र यदु से यदुवंश चला। इस वंश का आरम्भ सृष्टि रचयिता परमपिता ब्रह्मा से होता है, उनसे अत्रि एवं अत्रि के सोम से यह चन्द्र वंश कहलाता है। कोष्ट्र को यदुवंश का प्रथम पुरुष माना गया है। इसी वंश में भगवान श्रीकृष्ण पैदा हुए। कृष्ण यदुवंश के सर्वमान्य देव हैं। कृष्ण के वंशजों ने द्वारका, मथुरा पेशावर, गजनी, लाहौर, हिसार, स्यालकोट, देरावर गढ (बहावलपुर) आदि जगहों पर शासन किया। यदुवंशियो क्षत्रियों की आजादी के पूर्व जैसलमेर, करौली (राजस्थान), सिरमोर नाहन (हिमाचल प्रदेश), पटियाला, नाभा, कपूरथला, जिंद (पंजाब), मैसोर (कर्नाटक), कच्छ, नवानगर, जामनगर, राजकोट, मौरवी, गोंडल (गुजरात), त्रिपुरा आदि रियासतें भारत वर्ष में थीं।

राजा भाटी : यदुवंशी राजा बालबन्ध (स्यालकोट) और दिल्ली शासक प्रिथीपाल तंवर की पुत्री राजकुंवरी से राजा भाटी का जन्म हुआ। राजा भाटी श्रीकृष्ण के 89वें वंशज थे। राजा भाटी बड़े बहादुर एवं प्रजावत्सल शासक थे। वे अपने पिता के बाद 278 ई. में लाहौर के राजा बने। उन्होंने अपने पराक्रम से अपने साम्राज्य का खूब विस्तार किया तथा खजानों को अकूत बढाया एवं सैन्य शक्ति का विशाल निर्माण किया। इन्हीं राजा भाटी के वंशज भाटी राजपूत है। राजा भाटी के भाई सांभ अथवा समा के वंशजों ने सिंध एवं काठियावाड़ (गुजरात) पर राज किया एवं **'जाम'** की पदवी धारण की। सौराष्ट्र के जाड़ेजा, चूड़ासमा, सरवइया राजा सांभ के वंशज है। इसके अलावा भाटी के अन्य भाइयों की सन्तति संयुक्त रूप से भाटी कहलाती है।

राव भूपत राजा भाटी का पाटवी पुत्र था तथा वह भाटी वंश का प्रथम संवाहक भी। उसने 286 ई. में सतलज एवं घग्घर नदियों के मध्य के दौआब भूभाग पर भाटियों का प्रथम किला भटनेर (हनुमानगढ) बनवाया। भूपत के भाई सिन्धुराव ने सिरसा (हरियाणा) नगर बसाया एवं गढ बनवाया और भूभत के पौत्र सतोराव ने पंजाब और गजनी (अफगानिस्तान) का क्षेत्र जीतकर पुनः यदुवंशियों का परचम फहराया। भाटी के वंशजों की बाद की पीढ़ियों ने मूमलवाहन, मारोठ, केहरोर, बीजणोट, देरावर तणोट एवं लौद्रवा पर शासन किया। लौद्रवा के राजकुमार महारावल जैसलदेव ने अपनी नई राजधानी जैसलमेर की नींव संवत् 1212 श्रावण सुदि द्वादशी को रखी। वे 1152 से 1167 ई. तक जैसलमेर के प्रथम शासक रहे। जैसलमेर भाटियों की स्थाई तथा अन्तिम राजधानी रहा। आज भाटी राजपूत जैसलमेर, बीकानेर, जोधपुर, बाड़मेर सहित भारत के अन्य कई क्षेत्रों में निवास करते हैं। 'उत्तर भड़ किंवाड' रहा जैसलमेर का किला आज भी अपने इतिहास की शान के साथ 'छत्राला यादवपति भाटी' के विरुद को घोष करता उन्नत खड़ा है।

सूअर और यदुवंशी : मथुरा के शासक सहस्त्रबाहु या सुबाहु ने पेशावर (अब पाक में) को अपनी राजधानी बनाया। ऐसी मान्यता है कि एक बार राजा सुबाहु जंगल में शिकार खेलने गए। उन्हें एक बलिष्ठ सूअर दिखाई दिया और उन्होंने उस पर तीर कमान से वार किया परन्तु सुअर चकमा देकर जंगल में विलुप्त हो गया। राजा ने भी उस ओर घोड़ा दौड़ा दिया। बहुत दूर जाकर सुबाहु को फिर वही सूअर दिखाई दिया जो एक कन्दरा में जा घुसा। राजा सुबाहु भी उस कन्दरा में प्रवेश कर गए। कन्दरा में वह सूअर उन्हें विष्णु भगवान के अवतार वराह के रूप में नजर आया। वहां वराह रूप राजा को मूक आशीर्वाद मिला और उन्होंने प्रण लिया कि अब मैं और मेरे वंशज आगे कभी भी सूअर का शिकार नहीं करेंगे और न मांस रूप में ग्रहण करेंगे। उनके वंशज यदुवंशी आज भी उसी संकल्प को निभाते हैं इसीलिए भाटी राजपूत सूअर का शिकार व भक्षण नहीं करते हैं।

14 से 22 अक्टूबर के मध्य आठ शिविर सम्पन्न

जूना

श्री क्षत्रिय युवक संघ के शिविरों की श्रृंखला निरंतर चल रही है तथा प्राथमिक प्रशिक्षण शिविरों के साथ माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर भी अब प्रारम्भ हो चुके हैं। इसी क्रम में 14 से 22 अक्टूबर की अवधि में कुल आठ शिविर सम्पन्न हुए। जिनमें दो माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर, एक बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर तथा बालकों के पांच प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्मिलित हैं।

बाड़मेर संभाग में जूना गांव स्थित आशापुरा मन्दिर के प्रांगण में 14 से 20 अक्टूबर तक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ। शिविर का संचालन महेंद्रसिंह गूजरावास ने किया। शिविर के दौरान 18 अक्टूबर को माननीय संघप्रमुख श्री का सान्निध्य भी शिविरार्थियों को प्राप्त हुआ। संघप्रमुख श्री ने सभी शिविरार्थियों का परिचय प्राप्त किया। शिविर के दौरान ही 17 अक्टूबर को संघ के द्वितीय संघप्रमुख श्रद्धेय आयुवान सिंह जी हुडील की जयन्ती प्राचीन जूनागढ़ के खंडहरों में मनाई गई। यहां भूस्वामी आंदोलन के समय भूस्वामियों का शिविर भी आयोजित हुआ था। 19 अक्टूबर को शिविर में विजयादशमी मनाई गई तथा शस्त्र व शास्त्र पूजन का कार्यक्रम भी रखा गया। शिविर में विभिन्न छात्रावासों से शिविरार्थी सम्मिलित हुए जिनमें बाड़मेर से मोहन गुरुकुल छात्रावास, मल्लीनाथ छात्रावास, जय भवानी छात्रावास, राजपूत छात्रावास एन एच तथा चौहटन से भवानी क्षत्रिय बोर्डिंग हाउस, वांकल विहार, विरात्रा होस्टल तथा जालोर से प्रताप होस्टल, बागोडा सम्मिलित है। इसके अतिरिक्त उण्डखा, जसाई, चूली आदि गांवों से भी स्वयंसेवक शिविर में सम्मिलित हुए। अंतिम दिन शिविरार्थियों को विदाई देते हुए शिविर प्रमुख ने कहा कि मातृ स्वरूपा समाज की सेवा में ही हमारे जीवन की सार्थकता है और सेवा का मार्ग श्री क्षत्रिय युवक संघ है। अतः हमें संघ मार्ग पर निरंतर चलते रहना है। शिविर के दौरान तनसिंह जूना व नरपत सिंह उण्डखा ने व्यवस्था का जिम्मा सम्भाला। इसी प्रकार एक माध्यमिक प्रशिक्षण शिविर जोधपुर संभाग के शेरगढ़-बालेसर प्रान्त में अमृत नगर (बालेसर सत्ता) स्थित श्रीलाल आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालय के प्रांगण में 15 से 21 अक्टूबर तक आयोजित हुआ जिसका संचालन संघ के केंद्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने किया। शिविर में 17 अक्टूबर को माननीय संघप्रमुख श्री के सान्निध्य में श्रद्धेय आयुवानसिंह जी की जयन्ती मनाई गई जिसमें संघप्रमुख श्री ने आयुवानसिंह जी के जीवन की महत्त्वपूर्ण बातों को शिविरार्थियों से साझा किया। साथ ही संघप्रमुख श्री ने सभी घटों का निरीक्षण भी किया। 20 अक्टूबर को राता भाखर नामक स्थान पर भ्रमण का कार्यक्रम भी रखा गया। अंतिम दिन शिविरार्थियों को विदा देते हुए शिविर प्रमुख ने कहा कि यहां सीखे हुए ज्ञान को आचरण में उतारकर स्वयं को ऊर्जावान बनाए रखें तथा इस ज्ञान को परिपक्वता प्रदान करने हेतु आगामी उ.प्र.शि. में आए। शिविर में शेरगढ़-बालेसर, ओसियां, जोधपुर शहर प्रान्तों के स्वयंसेवकों के अतिरिक्त पंचवटी छात्रावास के विद्यार्थी भी सम्मिलित हुए। श्रीलाल विद्यालय के संचालक गोकुल सिंह बालेसर ने व्यवस्था का जिम्मा संभाला। पोकरण संभाग के अंतर्गत पोकरण प्रांत के रामदेवरा में 17 से 20 अक्टूबर की अवधि में एक बालिका प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन श्रीमती सीमा कंवर भुरटिया ने किया। उन्होंने बालिकाओं को तिलक लगाकर उनका स्वागत करते हुए कहा कि पूर्व काल में जो क्षत्रियोचित संस्कार हमें संयुक्त परिवार व्यवस्था में स्वतः ही प्राप्त हो जाते थे।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

'उज्ज्वल इतिहास और श्रेष्ठ परम्पराओं को जानें'

हमारे समाज की नई पौध को हमारे उज्ज्वल इतिहास एवं श्रेष्ठ परम्पराओं की जानकारी देने की परिवारों में कोई व्यवस्था नहीं रही है। घर में बड़े बुजुर्ग हमारे इतिहास के बारे में चर्चा नहीं करते हैं, बच्चों से श्रेष्ठ परम्पराओं और संस्कारों की कोई बात नहीं होती, गौरवशाली पूर्वजों के बारे में कुछ बताया नहीं जाता। हमारा गांव कब बसा, किसने बसाया, हमारा वंश वृक्ष क्या है, गांव के नाम का क्या इतिहास है आदि सामान्य जानकारियां भी नदारद होती जा रही हैं। इतिहास का ज्ञान विद्यालयों में पढ़ाए जा रहे इतिहास से होता है जो कि भ्रामक है। जान बूझकर भ्रम पूर्ण तथ्य पढ़ाए जाते हैं और हमारे बच्चे उसे ही इतिहास मानते हैं। बालोतरा संभाग के कानोड़ में आयोजित मा.प्र.शि. में शिविरार्थियों एवं ग्रामवासी समाजबंधुओं से चर्चा करते हुए 26 अक्टूबर को माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने उपस्थित लोगों को आह्वान किया कि हमारे इतिहास, धर्म एवं संस्कारों के बारे में अपने बच्चों को अपने घर में बताएं। यदि घरों में ऐसा नहीं कर पा रहे हैं तो उन्हें संघ की शाखाओं एवं शिविरों में भेजें। संघ उन्हें इन बातों की जानकारी देगा एवं साथ ही ऐसी जानकारी जुटाकर स्वयं को उधर बढ़ाने की भूख जागृत करेगा। इससे पूर्व 18 अक्टूबर को संघ प्रमुख श्री बाड़मेर के ही निकट जूना में आयोजित मा.प्र.शि. के शिविरार्थियों से मिले एवं उन्हें पूज्य तनसिंह जी द्वारा रचित सहगायन 'देता रहे जीवन ज्योति' में आए शब्द निर्धूम एवं निर्लिप्त का अर्थ एवं भाव समझाया। संघ प्रमुख श्री ने कहा कि कर्तव्य की वेदी पर बिना शिकायत अपना सर्वस्व न्यौछावर करना ही निर्धूम जलना है। हमारी शिकायत ही हमारे कर्म में धुआं पैदा कर उसे अशुद्ध कर देती है। साथ ही किसी भी काम को मात्र दायित्व भाव से करना ही निर्लिप्त भाव है। निर्लिप्त का अर्थ है लिपायमान न होना। किसी भी कार्य एवं परिस्थिति के प्रति राग या द्वेष होना ही निर्लिप्त होना है। संघ की साधना स्वाभाविक रूप से हमें निर्धूम एवं निर्लिप्त होने की ओर बढ़ाती है।

बालेसर

रामदेवरा

संपादकीय

राख आग का शव

पूज्य तनसिंह जी ने अपनी डायरी में लिखा कि 'बीते हुए काल की राख से केवल जीवित चिनगारी ही काम की है, शेष केवल राख है, जो मस्तक के जरूर लगाई जाती है, किन्तु उसमें सृजनात्मक विशेषता नहीं। राख में चिनगारी ही जीवन है। उसके अभाव में राख आग का शव है।' इतिहास को देखने का इससे अधिक स्पष्ट एवं सटीक मार्गदर्शन और नहीं हो सकता। हम क्या ढूंढ रहे हैं? हमें जो इतिहास पढ़ाया जा रहा है उसमें क्या ढूंढने को प्रेरित किया जा रहा है, यह विचारणीय है। राख को ढूंढ रहे हैं या चिनगारी को ढूंढ रहे हैं यह ध्यातव्य है। हमें जो इतिहास पढ़ाया जाता है उसमें उस काल का रहन-सहन बताया जाता है। स्थापत्य, प्रशासन, भूप्रबंधन विभिन्न कलाओं आदि का लेखा-जोखा पढ़ाया जाता है। वंशावालियां रटाई जाती हैं। कालक्रम को रटाया जाता है। हमारे घरों में जो इतिहास की बातें करते हैं उनमें भी क्या हम चिनगारी तक पहुंचते हैं या राख में ही हाथ पांव मारते है। हमारे पूर्वज कैसे कपड़े पहनते थे, क्या खाते-पीते थे, किन शस्त्रों से वे लड़ते थे, उनकी तलवार कैसी थी, कितनी भारी थी या हल्की थी, उनको क्या पदवी मिली थी क्या यह सब चिनगारी ढूंढने का प्रयास है? क्या हमारे पूर्वजों के गौरवमयी इतिहास का कारण उनकी वेशभूषा थी? क्या उनका रहन-सहन या सामान्य जीवन व्यवहार इसका कारण था? क्या उस काल का प्रशासनिक ढांचा, साहित्य, भूप्रबंधन, काराधान आदि उस गौरव का कारण है? जो भी उस गौरव का कारण है वही चिनगारी है और शेष सब राख है। राख भी त्याज्य नहीं है बल्कि पवित्र है। उसे भभूत समझ कर मस्तिष्क पर लगाया जाना ही चाहिए क्यों कि उसमें हमारे पूर्वजों की स्मृति है और हर सपूत को अपने पूर्वजों की स्मृति को बनाकर रखना चाहिए लेकिन फिर भी राख तो आखिर राख है उसमें चिनगारी तो नहीं है। उसे मस्तिष्क पर चढ़ाया जाना कृतज्ञता है लेकिन उससे आग को तो पुनर्जीवित नहीं किया जा सकता। उसके लिए तो चिनगारी ही चाहिए और वह चिनगारी वे मूलभूत कारण हैं जिनके कारण वह राख भभूत बन गई, पवित्र बन गई, मस्तिष्क पर धारण करने योग्य बन गई। उस राख की अवहेलना करना या उपेक्षा करना सपुताई नहीं है। हालांकि समाज में ऐसे भी लोग है जो अपने आपको श्रेष्ठ सिद्ध करने के अहंकार की तुष्टि में इस राख की अवहेलना भी करते हैं और इतिहास की चर्चा को ही अनावश्यक मानते हैं। उनका यह व्यवहार किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं माना जा सकता क्यों कि कृतघ्नता को किसी भी दृष्टिकोण से उचित नहीं माना जा सकता क्योंकि कृतज्ञता सबसे बड़ा माननीय गुण है और जो अपने पूर्वजों के कारण मिलने वाले गौरव के बदले कृतज्ञ होना भी स्वीकार नहीं करता उसकी चर्चा करना भी यहां समीचीन नहीं है। लेकिन हमारा विषय तो चिनगारी है। आग का शव नहीं बल्कि वह शेष रही आग है जिसे पुनः प्रज्ज्वलित करना संभव है। वह चिनगारी वे मूल्य हैं जिनके कारण राम का राज्य राम राज्य बन पाया। वे मूल्य हैं जिनके कारण भगवान कृष्ण की भगवत्ता हमें उनकी स्मृति में नतमस्तक होने को प्रेरित करती है। वे मूल्य जिनके कारण भयंकर नरसंहार करने वाले महाभारत के शेष बचे मात्र पांच प्राणी हमारा आदर्श बन पाए। हमारे बीते काल की चिनगारी राणा प्रताप का स्वाभिमान एवं स्वतंत्रता है तो राव चन्द्रसेन की आन है जिसने घोड़ों पर दाग लगाना भी स्वीकार नहीं किया। पाबूजी की कर्तव्य के प्रति तत्परता है तो गोगाजी चौहान का संघर्ष है। महान दुर्गाबाबा का त्याग और तपस्या है तो बुंदेलों का बांकापन है। यदि हमें बीते काल की आग की राख में ढूंढना है तो उस चिनगारी को ढूंढे जिसके कारण युगों तक पूरे संसार ने हमें सिर आंखों पर बिठाकर रखा और वह है हमारा क्षत्रियत्व, हमारी रजपूती, हमारा दायित्व बोध, हमारा त्याग और कर्तव्य की राह पर सर्वस्व स्वाहा करने की चाह। इसके अभाव में हमारे इतिहास को ढोना आग के शव को ढोने के समान है। लेकिन यह चिनगारी भी इसी राख में मिलती है इसलिए यह राख भी त्याज्य नहीं बल्कि स्तुत्य है लेकिन उपयोगी तब ही है जब इसमें छिपी चिनगारी को निःशेष होने से पूर्व पुनः प्रज्ज्वलित किया जाए। पूज्य तनसिंह जी का पूरा जीवन इसी चिनगारी को निःशेष होने से बचाने व इसे पुनः प्रज्ज्वलित करने में बीता और उनका ही उपजाया आंदोलन श्री क्षत्रिय युवक संघ भी आज उसी पथ पर प्रवाहमान है।

सुमेरपुर में प्रतिभा सम्मान

राजपूत एज्युकेशनल सेवा संस्थान सुमेरपुर के तत्वावधान में प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया गया जिसमें 175 छात्र-छात्राओं सहित विभिन्न सेवाओं में चयनित 19 समाज बंधुओं को सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में सुमेरपुर, शिवगंज, आहोर, रानी, देसूरी, बाली आदि क्षेत्रों की प्रतिभाएं सम्मिलित हुई। समारोह को संबोधित करते हुए सेवानिवृत आई.ए.एस. करणसिंह राठौड़ ने युवा पीढ़ी के प्रोत्साहन के लिए इस प्रकार के आयोजनों को उपयोगी बताया। गुजरात न्यायिक सेवा में चयनित न्यायिक मजिस्ट्रेट गौतमसिंह मगरीवाड़ा ने प्रतियोगिता के युग में जागरुकता को आवश्यक बताया। अतिरिक्त प्रादेशिक परिवहन अधिकारी जोधपुर सुमन भाटी ने एकता पर बल देने में ऐसे आयोजनों को सहायक बताया। ब्लॉक सी.एम.एच.ओ. डॉ. महेन्द्रसिंह ने विद्यार्थियों को लगन के साथ अध्ययन की सीख दी। संचालन परबतसिंह खिदारगांव ने किया।

शिविर के लिए सम्पर्क

3 से 6 नवम्बर तक जैसलमेर के सोनू गांव में होने वाले बालिका प्रा.प्र.शि. के लिए वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह बेरसियाला व पदमसिंह रामगढ़ के दल ने 20 व 21 अक्टूबर को मोकला, पारेवर, सोनू, जोगा, सेऊवा, तेजपाला भोजराज की ढाणी, हाबुर आदि गांवों में सम्पर्क किया। हर गांव में बालिकाओं एवं बुजुर्गों से मिलकर शिविर की जानकारी दी एवं बालिकाओं को शिविर स्थल तक पहुंचाने की जिम्मेदारी दी गई।

इसी प्रकार 28 से 31 अक्टूबर तक मकराना मंडल के रायथलिया में हुए शिविर के लिए भी नागणेची नवयुवक मंडल द्वारा स्नेहमिलन रखा गया जिसमें वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवतसिंह सिंघाणा ने संस्कार निर्माण में शिविरों की आवश्यकता को प्रतिपादित किया। गुजरात में बनासकांठा के नारोली में 11 नवम्बर से 17 नवम्बर तक प्रस्तावित बा.मा.प्र.शि. की तैयारी हेतु 14 अक्टूबर को उतर बुनियादी विद्यालय नारोली में बैठक आयोजित की गई। इसी बैठक में हुए निर्णय की अनुपालना में 23 अक्टूबर को वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह कुणधेर के नेतृत्व में पीलूड़ा, वलादर, केसरगाम, मोटा मेसरा, करकुण, सवराखा, वाघासण, ताखुआ, शेराऊ, नारोली आदि गांवों में सम्पर्क यात्रा की गई। 27 अक्टूबर को कुभारा, भापी, भडोदर, लोरवाड़ा, ईढाटा, चारडा, डेल आदि गांवों में सम्पर्क किया। 31 अक्टूबर को भोरडु, उदराणा, डुवा, ऊटवेलिया, राह, घोडासर, सेदला, जेतड़ा, जादला, खानपुर, नांगला, फोरणा, वातम, जालोटा, धनकवाडा, धुणसोल, गोलवी, पालडी, लिबाऊ, चिभड़ा, लिलाधर, आदि गांवों में सम्पर्क किया।

खरी-खरी 'जीम्यां पछै तो चळु हुया करे है'

एक बार एक बस में यात्रा के दौरान पाया कि बस के चालक के कुछ मित्र उससे मजाक कर रहे हैं। बातों ही बातों में वे उससे मस्ती करने लगे और ड्राईवर का ध्यान बस चलाने की अपेक्षा उनकी तरफ अधिक था। सामने से आ रहे एक साधन से बस टकराते टकराते बची। सवारियों ने ड्राईवर और उनके मित्रों को टोका तो कहने लगे, क्या हो गया? टकराई तो नहीं ना, अर्थात बस टकराती, दुर्घटना होती तब ही वे मानते कि वे गलत कर रहे थे। ऐसा ही एक बार एक टैम्पों में सफर करते समय हुआ। टैम्पों के चालक को टोका तो उसका जवाब भी कमोबेश ऐसा ही था। ऐसी घटनाएं हम सब के साथ सदैव घटती होती रहती हैं और प्रायः जवाब ऐसा ही होता है। हम किसी अनहोनी से तब तक असावधान रहना चाहते हैं जब तक कि वह घटित न हो जाए। भीड़ हो तो उसकी मानसिकता तो प्रायः यही होती है और इसीलिए भीड़ में दुर्घटनाएं अधिक होती हैं। 'टकराई तो नहीं ना' इस जवाब को देखें तो यह कितना बड़ा बचपना लगता है, उनसे पूछा जाए कि टकराने के बाद तो क्या वे यह जबाव देने लायक भी बचते। हमारे यहां एक कहावत है कि 'जीम्यां पछै तो चळु (कुल्ला) हुया कर है' और वही स्थिति टकराने के बाद होती। इसलिए सावधानी तो टकराने से पहले की ही होती है लेकिन प्रायः हम इसकी उपेक्षा करते हैं और हमारी यह उपेक्षा प्राणों का संकट मोल ले लेती है। हाल ही में हुआ अमृतसर हादसा ऐसी ही असावधानी का परिणाम है। सैंकड़ों लोगों की ट्रेक पर उपस्थिति ने क्या किसी के भी जेहन में यह आशंका पैदा नहीं की। ऐसा भी हो सकता है कि किसी ने टोका भी हो लेकिन नक्कार खाने में तूती की आवाज कौन सुनता है? छोटी-छोटी बातों में सावधानी के नाम पर अनावश्यक टांग अड़ाने वाले प्रशासन के भी आशंका नहीं पैदा हुई और इसीलिए तो अनुमति मिल गई कार्यक्रम की। हमारे यहां ऐसी घटनाएं प्रायः होती रहती हैं जिनमें हल्की सी असावधानी के कारण भयंकर दुर्घटनाएं होती रहती हैं, दुर्घटना के बाद कुछ समय उसके गीत गाए जाते हैं और अंततः गाड़ी उसी पटरी पर दौड़ने लगती है। फिर कभी भीड़ की मानसिकता में ऐसी कोई दुर्घटना घटती है और थोड़े दिन चर्चाओं को गर्म कर फिर नेपथ्य में चली जाती है। इन सबके मूल में यही मानसिकता काम करती है कि 'टकराई तो नहीं।' इस मानसिकता पर पूर्वजों द्वारा दी गई यह सीख भी काम नहीं करती कि 'जीम्यां पछै तो चळु हुया कर है।'

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	मा.प्र.शि.	10.11.2018 से 16.11.2018 तक	**वालूकड़ा** (गुजरात)। हाई स्कूल। भावनगर से 12 किमी. दूर वालूकड़ा ।
2.	मा.प्र.शि. (बालिका)	12.11.2018 से 18.11.2018 तक	**नारोली** (गुजरात)। गांव का विद्यालय भवन। थराद से बस सेवा है।
3.	प्रा.प्र.शि.	16.11.2018 से 18.11.2018 तक	**कनीज**। तहसील- अहमदाबाद। जसोदानगर, नडियाद रोड (खेड़ा)।
4.	प्रा.प्र.शि.	18.11.2018 से 21.11.2018 तक	**डिगाड़ी** तहसील-ओसियां (जोधपुर)। तिंवरी से बसें उपलब्ध।
5.	प्रा.प्र.शि.	22.11.2018 से 25.11.2018 तक	**बुडकिया (जोधपुर)**। देचू से टैक्सी।
6.	प्रा.प्र.शि.	22.11.2018 से 25.11.2018 तक	**नैणिया** (परबतसर)। परबतसर से पर्याप्त साधन। सम्पर्क : बजरंगसिंह नैणियां
7.	प्रा.प्र.शि.	01.12.2018 से 03.12.2018 तक	**चारड़ा**। धानेरा से बस उपलब्ध है।
8.	प्रा.प्र.शि.	23.12.2018 से 29.12.2018 तक	**देगराय** (जैसलमेर)। देवीकोट, मूलाना, भैंसड़ा, सांकड़ा से बस उपलब्ध है।
9.	मा.प्र.शि.	23.12.2018 से 29.12.2018 तक	**फोगेरा** (शिव)। बाड़मेर से हरसाणी मार्ग पर फोगेरा, शिव से भी फोगेरा के लिए बस उपलब्ध है।
10.	मा.प्र.शि.	23.12.2018 से 29.12.2018 तक	**जालोर शहर**। सम्पर्क सूत्र : गणपतसिंह भंवरानी-9828136005
11.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	25.12.2018 से 28.12.2018 तक	वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास, कृषि मंडी के सामने **बालोतरा**।
12.	प्रा.प्र.शि.	25.12.2018 से 28.12.2018 तक	**कचनारा** (मंदसौर)। मध्यप्रदेश।
13.	मा.प्र.शि.	25.12.2018 से 30.12.2018 तक	**घाटमपुर** (उ.प्र.)। रेल द्वारा कानपुर। वहां से बसे उपलब्ध।
14.	प्रा.प्र.शि.	25.12.2018 से 31.12.2018 तक	**हाडला** (बीकानेर)। कोलायत व बीकानेर से साधन।
15.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	26.12.2018 से 29.12.2018 तक	जयमलकोट **पुष्कर**।
16.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	28.12.2018 से 31.12.2018 तक	**मंदसौर** (म.प्र.)।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

शाखाओं ने किया नवरात्रि पूजन

आश्विन नवरात्रि के अवसर पर संघ की विभिन्न शाखाओं में आद्य शक्ति की पूजा-अर्चना एवं हवन किए गए। गुजरात में विशेष रूप से नौ दिन तक हवन आदि किए गए। शाखाओं के स्वयंसेवकों ने नौ दिन तक अलग-अलग घरों में जाकर हवन किए एवं संघ की शक्ति साधना की जानकारी दी। अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत की काणेटी शाखा में अलग-अलग घरों में यज्ञ किए गए। पींपण शाखा में यज्ञ के साथ पूर्व संघ प्रमुख आयुवान सिंह जी की जयंती भी मनाई गई। बनासकांठा व मेहसाणा प्रांत की नंदाली, पडुस्मा, भैंसाणा, मेहसाणा शहर आदि शाखाओं में नौ दिन तक यज्ञ किया गया। भावनगर शहर की पार्थ शाखा के स्वयंसेवकों ने 9 अलग-अलग घरों में यज्ञ किया। वहीं भक्तिनगर शाखा ने 17 जगह अलग-अलग घरों में यज्ञ किए। इसके अलावा जैसलमेर, जोधपुर आदि स्थानों पर स्थित संघ कार्यालयों में भी प्रतिदिन यज्ञ किए गए। पादरू शाखा में भी प्रतिदिन अलग-अलग संभागियों के सहयोग से यज्ञ किया गया।

महिला स्वावलंबन मेला संपन्न

राजपूत सभा जयपुर द्वारा 28 से 30 अक्टूबर तक महिला स्वावलंबन दीपावली प्रदर्शनी मेला संपन्न हुआ। मेले में महिलाओं द्वारा स्वनिर्मित उत्पादों, आकर्षक रजपूती पौशाकों, आभूषणों, लैदर बैग्स, हस्तनिर्मित पैंटिंग्स, सजावटी सामान आदि की 36 दुकानें लगाई गई। इसके अलावा राजस्थानी गीत, संगीत, घूमर, मेहंदी मांडना, ईनामी कूपन ड्रा, रोचक प्रतियोगिता आदि का भी आयोजन किया गया।

दीपसिंह रणधा सम्मानित

संघ के स्वयंसेवक एवं राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय सणाऊ (चौहटन) में हिन्दी के व्याख्याता दीपसिंह रणधा को 2 अक्टूबर को जोधपुर में राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा संभाग स्तरीय उत्कृष्ट शिक्षक अलंकरण से सम्मानित किया गया। श्री रणधा शिक्षण के साथ-साथ डिंगल भाषा में साहित्य सृजन भी करते है।

माननीय सर्वोच्च न्यायालय में प्रतिवेदन के लिए

हिन्दू धर्म के प्रति सर्वोच्च न्यायालय की शंकाओं का समाधान

परमहंस स्वामी श्री अड़गड़ानंद जरी महाराज

(गतांक से आगे)

7. नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते। स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात॥
(गीता, 2/40)

गीतोक्त साधना में आरम्भ का नाश नहीं होता। इसमें आरम्भ भर कर दिया जाय तो यह जन्म-मरण के महान भय से उद्धार करके ही छोड़ता है। आत्मा के आधिपत्य में निरन्तर चलते हुए तत्त्व के अर्थरूप परमात्मा की प्रत्यक्ष जानकारी ज्ञान है और इसके अतिरिक्त जो कुछ है, अज्ञान है। देखें-

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वं तत्त्वज्ञानार्थदर्शनम्। एतज्ज्ञानमिति प्रोक्तमज्ञानं यदतोऽन्यथा॥
(गीता, 13/11)

8. तस्माच्छास्त्रं प्रमाणं ते कार्याकार्यव्यवस्थितौ। ज्ञात्वा शास्त्रविधानोक्तं कर्म कर्तुमिहार्हसि॥
(गीता, 16/24)

मानव मात्र के कर्तव्य और अकर्तव्य की व्यवस्था में गीता शास्त्र ही प्रमाण है। इसका भली प्रकार अध्ययन करके तत्पश्चात गीता में वर्णित योगसाधना का आचरण करके मानव अविनाशी परम पद शाश्वत शान्ति और समृद्धि प्राप्त कर लेंगे।

9. गीतोक्त धर्म की एक अद्वितीय विशेषता है कि इसमें आरम्भ का नाश नहीं होता। इस गीतोक्त साधन का स्वल्प अभ्यास भी कर लिया जाय तो यह जन्म-मरण के बन्धन से उद्धार कर-के ही छोड़ता है। आप भले ही यह साधन छोड़ दें, किन्तु यह साधन जन्म-जन्मान्तरों तक आपका साथ नहीं छोड़ता और अगले जन्म में वहीं से पुनः आगे बढ़ जाता है जहाँ से साधन छूटा था। जब हर जन्म में वही गीतोक्त साधन करना है और अन्त तक वही धर्म रहता है, माया भी उसको मिटा नहीं सकती तो क्षुद्र मनुष्य कौन-सा धर्म परिवर्तन कर लेगा? धर्म परिवर्तन होता ही नहीं। जो लोग धर्म-परिवर्तन का प्रयास कर रहे हैं, वह रहन-सहन की व्यवस्था का परिवर्तन है, खान-पान, वेश-भूषा, वर्णमाला या रीति रिवाज का परिवर्तन है, धर्म का नहीं। मनुष्य मात्र का धर्म एक है-परमात्मा की प्राप्ति। इसमें आप कौन-सा परिवर्तन करेंगे? भगवद्-प्राप्ति के लिए गीतोक्त साधन है इन्द्रियों का संयम, सद्गुरु का ध्यान! इसमें भी आप कौन-सा परिवर्तन करना चाहेंगे? इन्द्रिय-संयम के बिना, मन के निरोध के बिना कब किसने परमेश्वर को पाया है? इसलिए सबको इस आदि धर्मशास्त्र गीता के नियमों का पालन करना ही होगा।

जिन महापुरुषों ने एक ईश्वर को सत्य बताया, गीता के ही संदेशवाहक हैं। ईश्वर से ही लौकिक एवं पारलौकिक सुखों की कामना, ईश्वर से डरना, अन्य किसी को ईश्वर न मानना-यहां तक तो सभी महापुरुषों ने बताया; किन्त ईश्वरीय साधना, ईश्वर तक की दूरी तय करना तथा ईश्वर में स्थिति प्राप्त कर लेना-यह केवल गीता में ही पूर्ण रूप से, एक स्थान पर, क्रमबद्ध रूप में सुरक्षित है।

10. गीता (6/5-6) के अनुसार मनुष्य को चाहिये कि अपने द्वारा अपना उद्धार करे, अपने आत्मा को अधोगति में न पहुंचावे। क्योंकि जीवात्मा ही स्वयं ही अपना मित्र है और यही अपना शत्रु भी है। जिस पुरुष द्वारा मन और इन्द्रियों सहित शरीर जीता हुआ है, उसके लिए उसी की आत्मा मित्र है और जिसका मन, इन्द्रिय और शरीर जीते नहीं गये हैं, उसकी आत्मा ही उसका शत्रु बन जाती है।

11. गीता (4/13) के अनुसार भगवान श्रीकृष्ण कहते हैं कि चार वर्णों की रचना मैंने की। तो क्या जन्म के आधार पर मनुष्यों को बांटा? नहीं, गुणों के आधार पर कर्म को बांटा गया। कौन-सा कर्म? नियत कर्म। यह है यज्ञ की प्रक्रिया, जिसमें होता है-श्वास में प्रश्वास का हवन, प्रश्वास में श्वास का हवन, इन्द्रिय-संयम, मन का शमन, दैवीय सम्पद् का अर्जन इत्यादि, जिसका शुद्ध अर्थ है आराधना। इस कर्म को चार श्रेणियों में बाँटा गया। जैसी क्षमतावाला पुरुष है, उसे उसी श्रेणी से आराधना करनी चाहिए। दूसरों की नकल करने वाला भय को प्राप्त होता है। इन विभिन्न श्रेणी के साधकों को क्रमशः शूद्र, वैश्य, क्षत्रिय तथा ब्राह्मण की संज्ञा दी गयी है। शूद्रवाली क्षमता से कर्म का आरम्भ होता है और साधन में उन्नति करते हुए वही साधक क्रमशः ब्राह्मण बन जाता है, और इसके आगे जब वह परमात्मा में प्रवेश पा जाता है तब ब्राह्मण वर्ण से भी ऊपर उठ जाता है। इस प्रकार वर्ण एक ही साधक का ऊँचा-नीचा स्तर है, न कि जाति।

12. गीता (3/35-41) के अनुसार-काम और क्रोध अग्नि के समान जो भोगने से कभी तृप्त न होने वाले, बड़े पापी हैं। इनके वशीभूत होकर प्राणी पाप का आचरण करता है। जैसे धुएँ से अग्नि और मल से दर्पण ढक जाता है, जैसे जेर से गर्भ ढका रहता है उसी प्रकार काम, क्रोधादि विकारों से ज्ञान ढका रहता है। इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि इसके वासस्थान कहे जाते हैं। यह काम मन, बुद्धि और इन्द्रियों के द्वारा ज्ञान को आच्छादित कर जीवात्मा को मोह में डालता है। अतः इन्द्रियों को वश में करके, ज्ञान और विज्ञान का नाश करने वाले इस पापी काम को मारना है। इस प्रकार गीता का युद्ध और गीता की साधना हृदयदेश की और अन्तर्जगत की लड़ाई है। इस शरीर से यह इन्द्रियाँ बलवान है, इन्द्रियों से परे मन है, मन से परे बुद्धि है, बुद्धि से परे आपकी आत्मा है। वही आत्मा हैं आप! इसलिए इन्द्रिय, मन और बुद्धि का निरोध करने में आप सक्षम हैं। अतः इस काम रूपी दुर्जय शत्रु को मार।

शेष अगले अंक में ...

14 से 22 अक्टूबर के मध्य आठ शिविर सम्पन्न

(पृष्ठ तीन से लगातार)

वर्तमान में उनका अभाव हो रहा है। इस कमी को पूरा करने के लिए ही पूज्य तनसिंह जी ने श्री क्षत्रिय युवक संघ की स्थापना की। हमें संघ के संस्कारों को ग्रहण करके उन्हें अपने परिवार और सम्पूर्ण समाज में विस्तारित करना है। शिविर में फलसुण्ड, भणियाणा, दांतल, अवाय, सत्याया, अजासर, छायण, सुजासा, रामदेवरा आदि गांवों की लगभग 150 बालिकाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। अमर सिंह रामदेवरा, अगरसिंह रामदेवरा, भोमसिंह रामदेवरा, खींवसिंह रामदेवरा, किसनसिंह रामदेवरा ने व्यवस्था में सहयोग किया। जालोर संभाग के सांचोर-रानीवाड़ा मंडल में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर करड़ा में 16 से 19 अक्टूबर की अवधि में आयोजित हुआ। करडेश्वर महादेव मंदिर के प्रांगण में सम्पन्न इस शिविर का संचालन संभाग प्रमुख अर्जुन सिंह देलदरी ने किया। उन्होंने शिविरार्थियों को कहा कि संघ हमारे जीवन को सार्थक करने का माध्यम है। हम भाग्यशाली हैं कि ईश्वर ने हमें संघ से जुड़ने का अवसर दिया है। हमारा कर्त्तव्य है कि जागृत रहकर इस अवसर का पूरा लाभ उठाएं। 17 अक्टूबर को श्रद्धेय आयुवानसिंह जी की जयंती मनाई गई तथा सभी शिविरार्थियों ने उनकी तस्वीर के सामने पुष्पांजलि अर्पित की। शिविर में करड़ा, करवाड़ा, दांतवाड़ा, सेवाड़ा, जाखड़ी, रतनपुर, सिणेर, सिवाड़ा, कारोला, पुर, केरिया, सुरावा, दासपां, लाछीवाड़, अचलपुर, चौरा आदि गांवों के बालकों व युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। मंदिर के महंत श्री मैथिलीशरण जी ने समस्त करड़ा ग्रामवासियों के सहयोग से व्यवस्था संभाली।

अजमेर प्रांत में भी एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर किशनगढ़ में मझेला रोड स्थित राजपूत सभा भवन में 14 से 17 अक्टूबर तक आयोजित हुआ। संघ के संचालन प्रमुख लक्ष्मणसिंह बेण्यांकाबास ने इस शिविर का संचालन किया। उन्होंने शिविरार्थियों को कहा कि हमारा उज्ज्वल इतिहास हमारे पूर्वजों के त्याग व बलिदान से निर्मित हुआ है। उसी मार्ग पर चलकर हम भी समाज व राष्ट्र की सेवा में नियोजित होकर अपने स्वधर्म का पालन करें। इसी का शिक्षण श्री क्षत्रिय युवक संघ अपनी शाखाओं व शिविरों के माध्यम से दे रहा है। शिविर में पुष्कर, केकड़ी, रूपनगढ़, अराई सहित जिले के विभिन्न क्षेत्रों से युवा सम्मिलित हुए तथा संघ का प्राथमिक स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर के अंतिम दिन श्रद्धेय आयुवानसिंह जी की जयंती पर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की गई। इसी अवधि में बीकानेर संभाग के नोखा कोलायत प्रान्त में एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर चारणवाला गांव में आयोजित हुआ। शिविर का संचालन खींवसिंह सुल्ताना ने किया। उन्होंने उपस्थित युवाओं को क्षात्रधर्म के बारे में बताते हुए कहा कि अमृत तत्व की रक्षा तथा विष तत्व का विनाश ही क्षत्रिय का धर्म है। शिविर में चारणवाला, मालणसर, आशापुरा, हिन्दूपुरा आदि गांवों के बालकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। बीकानेर संभाग में ही एक अन्य प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर खारा गांव में स्थित सेफराज जी महाराज मन्दिर परिसर में 19 से 22 अक्टूबर की अवधि में सम्पन्न हुआ। शिविर का संचालन भागीरथसिंह सेरूणा ने किया। उन्होंने कहा कि हम कोरे कागज की तरह संघ के पास आए और संघ ने अपनी अनूठी संस्कारमयी कर्म प्रणाली द्वारा हमारे सुप्त जातीय भाव को जागृत किया। त्याग और बलिदान का पाठ पढ़ाया। ईश्वर की विशिष्ट कृति होने का भान कराया एवं स्वधर्म पालन के मार्ग पर अग्रसर होने को प्रेरित किया। शिविर में खारा, धालेरा, झंझेऊ, करनीपुरा, बेलासर, मेड़ी मगरा, गिगासर आदि गांवों के युवाओं ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। व्यवस्था में विजयसिंह, सांगसिंह, गजेसिंह, लाधूसिंह, गणेशसिंह, पूनम बाबा का सहयोग रहा। शिविर के दौरान 21 अक्टूबर को स्नेहमिलन का भी आयोजन हुआ जिसमें गांव के समाजबंधु सम्मिलित हुए जिन्हें वरिष्ठ स्वयंसेवक उम्मेदसिंह सुल्ताना व राजेन्द्र सिंह आलसर ने संघ के बारे में जानकारी दी। इसी प्रकार एक प्राथमिक प्रशिक्षण शिविर पाली जिले के देसूरी क्षेत्र में सुमेर गांव में 19 से 22 अक्टूबर की अवधि में ही सम्पन्न हुआ। लोहागर महादेव मंदिर के प्रांगण में आयोजित इस शिविर में बासनी, सुमेर, माडपूर, चोकड़िया, मगरतलाव, आशापूरा, गूड़ा आसकरण, जोजावर आदि गांवों के युवा सम्मिलित हुए। शिविर का संचालन मोहब्बत सिंह धींगाणा ने किया। उन्होंने कहा कि संघ द्वारा बताए मार्ग पर निष्ठापूर्वक चलने पर हम सहज रूप से अपने जीवन लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। संघ का कार्य क्षात्रधर्म का ही स्वरूप है अतः यह कार्य हमारे लिए स्वधर्मपालन ही है। योगेन्द्र सिंह बासनी, श्रवण सिंह गुड़ा आसकरण, श्रवण सिंह सासरी ने मिलकर व्यवस्था संभाली। **22 से 31 अक्टूबर के बीच भी अनेक मा.प्र.शि., प्रा.प्र.शि. एवं बालिका शिविर संपन्न हुए। उन सबके विस्तृत समाचार आगामी अंक में प्रकाशित किए जाएंगे।**

(पृष्ठ एक का शेष)

गुजरात

उठने का...

अहमदाबाद में राजस्थान राजपूत परिषद के दशहरा मिलन कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हम स्वयं ही संस्कार भूल गए हैं। उन भूले हुए संस्कारों की स्थिति में ही हम पैसा कमा रहे हैं, परिवार पालन कर रहे हैं और बच्चों को संस्कारित करने की बात कर रहे हैं यह चिंता और चिंतन दोनों का विषय है। चिंता होने पर ही चिंतन होता है और चिंतन से ही समाधान निकलता है। जैसे शरीर को प्रतिदिन भोजन की आवश्यकता है, आत्मा को प्रतिदिन भजन की आवश्यकता है वैसे ही संस्कारों के लिए प्रतिदिन अभ्यास की आवश्यकता है। हमारा एक दिन का मिलना आपसी परिचय के लिए ठीक है लेकिन संस्कार निर्माण के लिए पर्याप्त नहीं है। संस्कार वही दे सकता है जो स्वयं संस्कारवान हो। निर्धन धन का दान नहीं कर सकता। जिनके पास अपने बच्चों के लिए समय नहीं है, संस्कार नहीं हैं वह वास्तव में दरिद्र है। लेकिन संस्कार कहीं बाहर से नहीं मिलते। माता के गर्भ धारण से ही बालक में संस्कार सींचन का काम प्रारम्भ हो जाता है, मां का आचरण कैसा है, वह क्या खाती है, कैसे सोचती है इसका प्रभाव पड़ता है और दुर्भाग्य से ये सब बातें आज गौण हो गई हैं और यही पूरे संसार की अवनति का कारण है। संसार सो सकता है लेकिन क्षत्रिय का उठना, जागना और चलना संसार की आवश्यकता है। राजपूत राजपूत का ही चिंतन करे यह बात राजपूत जाति के लिए ठीक हो सकती है लेकिन यह रजपूती नहीं है, क्षत्रियत्व नहीं है, क्षात्रधर्म नहीं है। क्षात्रधर्म तो संसार के कल्याण के लिए है और इसके लिए दृढ़ संकल्प ही हमारे लिए वांछनीय है।

अहमदाबाद के इस कार्यक्रम के अलावा पूरे भारत भर में दशहरे के अवसर पर दशहरा सम्मेलन एवं शस्त्र व शास्त्र पूजन का कार्यक्रम रखा गया। दशहरे के दिन ही राव शेखाजी का जन्म दिवस भी मनाया जाता है। मा.प्र.शि. जूना में शस्त्र व शास्त्र पूजन किया गया। बाड़मेर में विगत वर्षों की भांति छठी पथ प्रेरणा यात्रा निकाली गई। रावत त्रिभुवनसिंह के नेतृत्व में सैंकड़ों लोगों ने परम्परागत वेशभूषा एवं शस्त्रों सहित 4 किमी की पथप्रेरणा यात्रा निकाली। प्रताप युवा शक्ति द्वारा भीलवाड़ा के कुम्भा ट्रस्ट परिसर में शस्त्र एवं शास्त्र पूजन समारोह रखा गया। साथ ही प्रतिभा सम्मान समारोह रखा गया जिसमें राजकीय सेवाओं में चयनित 70 युवाओं को सम्मानित किया गया। 100 प्रतिभावान विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया। सम्मान स्वरूप प्रमाण-पत्र एवं महाराणा प्रताप की बड़ी तस्वीर भेंट की गई। मुंबई में प्रतिवर्ष की भांति राजस्थान राजपूत परिषद का 37वां दशहरा सम्मेलन रखा गया जिसमें मुंबई के स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं प्रवासी राजस्थानी समाज बंधुओं ने भागीदारी निभाई। झुंझुनूं की बाढ़ा की ढाणी में इस अवसर पर राव शेखाजी की जयंती सामूहिक रूप से मनाई गई। बीकानेर के बीदासर हाउस में क्षत्रिय सभा बीकानेर द्वारा शेखाजी जयंती व दशहरा समारोह रखा गया। जयपुर ग्रामीण प्रांत की रोजदा शाखा द्वारा विजय दशमी पर्व मनाया गया।

महाराव शेखा संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष की भांति जयपुर स्थित शेखाजी सर्किल पर विजयादशमी के अवसर पर महाराव शेखा जयंती मनाई गई जिसमें विभिन्न संगठनों के प्रतिनिधि शामिल हुए। गुजरात में दशहरे को क्षत्रियों के नव वर्ष के रूप में मनाया जाता है। हर शहर व गांव में समाज द्वारा शस्त्र एवं शास्त्र पूजन कर दशहरा मनाया जाता है। धंधुका में श्री चुड़ासमा राजपूत समाज द्वारा वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा के सानिध्य में समारोह रखा जिसमें शिक्षा मंत्री भूपेन्द्रसिंह चुड़ासमा सहित अनेक गणमान्य लोग शामिल हुए। भावनगर के वल्लभीपुर, तलाजा, शिहोर, महुवा, मोरचंद, अवाणिया में दशहरा मनाया गया। बनासकांठा, थराद, पालनपुर, राजपूत होस्टल पाटण, नागणेश्वरी माता मंदिर लोलाड़ा, कुकराणा में भी धूमधाम से विजयादशमी मनाई गई। गांधी नगर में विभिन्न राजपूत संगठनों ने मिलकर दशहरा मनाया। साबरकांठा के ईडर व हिम्मतनगर में व पंचमहल के हालोल व गोधरा में दशहरा मनाया गया। कच्छ के मांडवी, मून्दरा, गांधीधाम, अंजार, नखत्राणा, वर्मानगर, भुज आदि में धूमधाम से दशहरा मनाने के समाचार हैं। सुरेन्द्रनगर के लखतर, लिवंड़ी धांगध्रा, मूणी, हणवद एवं सुरेन्द्रनगर शहर में वाहन रैली के साथ शोभायात्रा निकाल कर दशहरा मनाया गया। जामनगर शहर में विधायक हकुभा के नेतृत्व में व ओखा, कालावाड़ व ध्रोल में भूपेन्द्रसिंह चुड़ासमा के आतिथ्य में दशहरा मनाया गया। संघ के अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत का कार्यक्रम काणेटी में रखा गया जिसमें शास्त्र, शस्त्र व शमी का पूजन किया गया। अहमदाबाद शहर के गोता स्थित राजपूत समाज भवन में विद्यासभा के नेतृत्व में शस्त्र पूजन के पश्चात प्रतिभावान विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। अहमदाबाद में राजपूत युवा संघ द्वारा भी शस्त्र पूजन का कार्यक्रम किया गया। साणंद का कार्यक्रम वीरपुर में पूर्व मुख्यमंत्री शंकरसिंह वाघेला की अध्यक्षता में आयोजित हुआ। इसके अलावा धोलेरा, दशकोर, नवसारी, सूरत, चलथान, भरूच, वडोदरा आदि स्थानों पर भी धूमधाम से दशहरा मनाने के समाचार हैं।

जयपुर

संघर्षपूर्ण...

जूना के खंडहर

बालेसर के अलावा इस दौरान चल रहे शिविरों, शाखाओं एवं कार्यालयों में पूज्यश्री की जयंती मनाई गई। केन्द्रीय कार्यालय संघ शक्ति में माननीय महावीरसिंह सरवड़ी के सानिध्य में जयंती मनाई गई। सूरत के स्वयंसेवकों ने सारोली स्थित वीर अभिमन्यु पार्क में तनेराज शाखा में जयंती मनाई। बाड़मेर के जूना में चल रहे मा.प्र.शि. के दौरान जयंती उन खंडहरों के बीच मनाई गई जहां भूस्वामी आंदोलन के समय भूस्वामियों का शिविर आयोजित हुआ था। बालोतरा प्रांत में राजपूत छात्रावास, देमों की ढाणी, कांकराला, मेवानगर, विवेकानंद हॉस्टल, टापरा, दईपड़ा खींचियान आदि शाखाओं में जयंती मनाई गई। मुंबई की विभिन्न शाखाओं ने 14 अक्टूबर को रविवार होने के कारण जयंती मनाई। पादरू की नारायण शाखा में पादरू मंडल का कार्यक्रम रखा गया। संघ की प्रेरणा से संचालित दुर्गा महिला विकास संस्थान सीकर में बालिकाओं ने वयोवृद्ध स्वयंसेवक रतनसिंह नंगली के निर्देशन में जयंती मनाई। कुचामन में श्रद्धेय माट्साब के नाम से बने संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन में वरिष्ठ स्वयंसेवक भगवतसिंह सिंघाणा के निर्देशन में जयंती मनाई गई। बडोड़ागांव स्थित देगराय पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों एवं शाखा के स्वयंसेवकों ने जयंती मनाई। बीकानेर स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में श्रद्धेय माट्साब को पुष्पांजलि अर्पित कर जयंती मनाई गई। इसके अलावा गुजरात की विभिन्न शाखाओं में भी जयंती मनाने के समाचार प्राप्त हुए हैं।

शंकरसिंह खानपुर को पत्नी शोक

श्रीमती सज्जनकंवर

संघ के वरिष्ठ स्वयंसेवक शंकरसिंह खानपुरा की पत्नी **श्रीमती सज्जनकंवर** का 20 अक्टूबर को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

बलवंतसिंह महणसर को पितृशोक

श्री दयालसिंह

संघ के स्वयंसेवक बलवंतसिंह महणसर के पिता एवं रिड़मल सिंह व मनमोहनसिंह के दादोसा **श्री दयालसिंह** का 25 अक्टूबर को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है एवं शोक संतप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है।

राव पूनमसिंह की प्रतिमा का अनावरण

शेरगढ़ तहसील के चाबा गांव में राव पूनमसिंह देवराजोत की अश्वारोही प्रतिमा का अनावरण पूर्व महाराजा गजसिंह, केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री गजेन्द्रसिंह, तारातरा महंत प्रतापपुरी जी, निरंजन भारती जी, शिवगिरीजी, रावलपुरी जी, विधायक बाबूसिंह आदि के आतिथ्य में 13 अक्टूबर को किया गया। चाबा, भोमसागर, गुमानसिंहपुरा गांवों के समाज बंधुओं की ओर से आयोजित इस समारोह में शेरगढ़, बालेसर, देचू, सेखाला पंचायत समितियों के हजारों लोग पहुंचे। समारोह में वक्ताओं ने कहा कि आदि काल से क्षत्रियों ने अपने पराक्रम के बल से मानव जाति की रक्षा की है। क्षत्रियों को वर्तमान में भी अपने तेज को जागृत कर संसार को दिशा देनी चाहिए। समारोह में युवा साहित्यकार मदनसिंह सोलंकियातला की पुस्तक 'पूनम प्रकाश' का विमोचन भी किया गया। समारोह में देवराज हितकारिणी सभा के अध्यक्ष कल्याणसिंह राठौड़, पोकरण विधायक शैतानसिंह, हनुमानसिंह खांगटा, राणोसा प्रतापसिंह सहित अनेक गणमान्य लोग भी उपस्थित रहे।

अजमेर नरेश अजयपालदेव का स्मृति दिवस मनाया

इतिहास शुद्धिकरण अभियान के तहत 28 अक्टूबर को मकराना के गणपति गार्डन में अंजर धणी अजमेर नरेश अजयपालदेव जी का स्मृति दिवस मनाया गया। वक्ताओं ने बताया कि अजयपाल जी सम्राट पृथ्वीराज चौहान के परदादा थे। उन्होंने अपने साम्राज्य का विस्तार कर प्रबल शासक के रूप में स्वयं को स्थापित किया। उन्होंने अपने जीवित रहते अपना विशाल साम्राज्य अपने उत्तराधिकारियों को सौंप दिया एवं अपना शेष समय पुष्कर व अजमेर के बीच अजयसर नामक स्थान पर प्रभु स्मरण कर व्यतीत किया। इसके अलावा वक्ताओं ने क्षत्रिय एवं क्षात्रधर्म के बारे में बताते हुए अतुलनीय त्याग व बलिदान को नमन किया। युगानुकूल शस्त्र अपनाने की भी बात हुई। समारोह को सिरोही के पूर्व महाराजा रघुवीरसिंह, जितेन्द्रसिंह, मनीषसिंह, दिनेश सिंह बरवाली, दिग्विजयसिंह गौवठिया, शक्तिसिंह बांदीकुई आदि ने संबोधित किया।

दीपावली के शुभ अवसर पर
पथप्रेरक के पाठकों को
हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छु :
नारायणसिंह आईन्ता (जैसलमेर)
हाल सूरत : 9601781259

दीपावली के शुभ अवसर पर
पथप्रेरक के पाठकों को
हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छु :
बाबूसिंह सोनू (जैसलमेर)
हाल सूरत : 8758416069

दीपावली के शुभ अवसर पर पथप्रेरक के पाठकों को हार्दिक शुभकामनाएं

स्वरूप एजेन्सी, सूरत

शुभेच्छु : लूणसिंह, पृथ्वीसिंह, नीमसिंह, लेखराजसिंह भाडली (जैसलमेर)।

दीपावली के शुभ अवसर पर
पथप्रेरक के पाठकों को
हार्दिक शुभकामनाएं

शुभेच्छु :
लीलुसिंह सुल्ताना (जैसलमेर)
हाल सूरत : 9662790733

हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

श्री कीर्तिपालसिंह काबावत
(पूर्व अधिकारी पी.एन.बी.)
सुपुत्र
ठा.सा. डूंगरसिंह जी (Retd R.C.S.)
ठि. आकोली (जालोर) का
Assistant Professor (Law)
पद पर चयन होने व राजकीय विधि महाविद्यालय, पाली में कार्यग्रहण करने पर
हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

शुभेच्छु : प्रतापसिंह, कमलसिंह, राजेन्द्रसिंह काबावत (ठि. आकोली) काकोसा।
ठा.सा. तखतसिंह, डॉ. सरदारसिंह, लालसिंह,
राजेन्द्रसिंह कुम्पावत ठि. गुड़ा पृथ्वीराज (पाली) मामोसा।
भगवती कंवर - डा. मदनसिंह महेचा, ठि. जागसा (बाड़मेर) भुआसा-फुफोसा।
डॉ. गीतांजलि-डॉ. धीरजसिंह शेखावत ठि. सामी (सीकर) जीजा-जीजोसा।

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org